International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157; Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 2; Issue 1; January 2017; Page No. 15-18

आगरा जिले के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर शैक्षिक तकनीकी उपयोग का अध्ययन

[1] दुर्ग विजय पाल सिंह, [2] डॉ0 जय सिंह

[1] शोध छात्र शिक्षा, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।
[2] प्राध्यापक शिक्षा, शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश
वर्तमान समय में शिक्षा के सभी स्तरों पर शैक्षिक तकनीकी का उपयोग प्रमुखता से किया जा रहा है किन्तु किसी क्षेत्र विशेष के संदर्भ में शिक्षा के किसी भी स्तर पर शैक्षिक तकनीकी के उपयोग एवं प्रभाव का मूल्यांकन आदि पर्यन्त नहीं किया गया। वस्तुतः शिक्षा को रोचक एवं आकर्षक बनाने के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु शिक्षा में शैक्षिक तकनीकी का उपयोग एक शैक्षिक नवाचार के रूप में किया जा रहा है। शोध क्षेत्र में 82.54 प्रतिशत आगरा जिले में माध्यमिक शिक्षा स्तर के अधिकांश विद्यालयों में शैक्षिक तकनीकी का उपयोग नही किया जा रहा है और 85.29 प्रतिशत माध्यमिक शिक्षा स्तर पर तकनीकी शिक्षा हेतु विद्यालयों में पर्याप्त संसाधन उपलब्ध नही कराये जा रहे है।

मूल शब्दः आगरा जिला, माध्यमिक शिक्षा स्तर, शैक्षिक तकनीकी, विद्यार्थी, शिक्षण अधिगम, अध्ययन।

1. प्रस्तावना
शैक्षिक तकनीकी वैज्ञानिक आविष्कारों एवं मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों का शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में प्रयोग है, जिसके फलस्वरूप शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सके। इसके द्वारा शिक्षा को अधिक रोचक, सरल एवं प्रभावशाली बनाया जा सकता है। शैक्षिक तकनीकी शिक्षा की प्रक्रिया को सुदृढ़ बनाने का प्रयास करती है। यह न केवल शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी बनाती है अपितु यह शिक्षा के हर क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अतः शैक्षिक तकनीकी ऐसा विज्ञान है, जिसके द्वारा शिक्षा के विशिष्ट उद्देश्यों की अधिकतम प्राप्ति के लिए नई–नई व्यूह रचनाओं का विकास किया जा सकता है।

वर्तमान समय में शैक्षिक तकनीकी की उपयोगिता दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। शिक्षा के हर क्षेत्र में इसका लाभ लिया जा रहा है। शैक्षिक तकनीकी ने शिक्षक के कार्य को अत्यंत आसान बना दिया है। इसकी सहायता से शिक्षक कक्षा में पाठ्य–वस्तु के प्रस्तुतीकरण को अधिक रोचक, ग्राह्य, सरल व प्रभावशाली बना सकता है।

कुछ लोगों में यह भ्रम है कि शैक्षिक तकनीकी के नए आविष्कारों, जैसे– कम्प्यूटर सह–अनुदेशन, कम्प्यूटर आधारित शिक्षण आदि के प्रयोग से शिक्षक की भूमिका समाप्त हो जायेगी। सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली मशीनीकृत हो जायेगी, शिक्षक की भूमिका केवल पाठ्य–वस्तु तैयार करने तक ही सीमित हो जायेगी, परन्तु यह एक गलत धारणा है। शैक्षिक तकनीकी व शिक्षक एक दूसरे के पूरक हैं। शैक्षिक तकनीकी ने शिक्षा का विस्तार किया है। इसकी सहायता से शिक्षक कम समय व शक्ति में ही अधिक से अधिक सूचनाओं को छात्र–छात्राओं तक पहुँचा सकता है। शिक्षक अपने समय का सदुपयोग सूक्ष्म शिक्षण, उपचारात्मक शिक्षण, छात्र–छात्राओं की समस्याओं को दूर करने तथा निर्देशन व परामर्श देने में करेंगे। इससे शिक्षक एवं शिक्षण की भूमिका अधिक सुदृढ़ हुई है। शिक्षण के भावात्मक पक्ष को केवल कक्षा–शैक्षिक तकनीकी की सहायता से और भी प्रभावपूर्ण बनाया जा सकता है।

शैक्षिक तकनीकी का अर्थ समझने से पहले तकनीकी का अर्थ समझना आवश्यक है। इसका कारण यह है कि विज्ञान ने सृजन तथा निर्माण को जितना भी बढ़ावा दिया है वह सब तकनीकी के माध्यम से ही सम्भव हुआ है। अमरीका तथा रूस आदि विकसित राष्ट्रों की प्रगति केवल विज्ञान तथा तकनीकी के बल पर ही हुई है। अब हमारे देश में भी विज्ञान एवं तकनीकी का प्रयोग किया जा रहा है जिससे हमारा देश भी अमरीका तथा रूस की भाँति पूर्णरूपेण विकसित हो जाय। ओफिश महोदय का मत है कि तकनीकी, विज्ञान का कला में प्रयोग है। इस प्रकार तकनीकी का आधार विज्ञान है तथा इसका कार्य है प्रयोगात्मक कला का विकास करना। स्मरण रहे कि तकनीकी जहाँ एक ओर नवीन संगठनों तथा प्रतिमानों एवं डिजाइनों का निर्माण करती है वहाँ दूसरी ओर यह मानव तथा मशीन प्रणाली की क्रिया को गठित भी करती है। ध्यान देने की बात है कि तकनीकी न तो केवल मशीन मात्र ही है और न ही मनुष्य प्रणाली है वरन् यह इन सब का साधन एवं सार है। अतः इसको केवंल मशीन तक ही सीमित रखना भूल होगी। संक्षेप में तकनीकी कला में विज्ञान का प्रयोग है तथा इसका निर्माण से प्रत्यय सम्बन्ध है। दूसरे शब्दों में तकनीकी का अर्थ विज्ञान के ज्ञान को दैनिक जीवन की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्रयोग करना है अथवा वैज्ञानिक ज्ञान के व्यवहार रूप को तकनीकी कहते हैं। इस प्रकार जब वैज्ञानिक ज्ञान को व्यावहारिक कार्यों में किया जाता है तो उसे तकनीकी कहते हैं।

विश्व के सभी देशों के लिए शैक्षिक तकनीकी का विशेष महत्व है। अतः प्रत्येक देश अपनी शैक्षिक व्यवस्था में शैक्षिक तकनीकी को लागू कर रहा है। निम्नलिखित पंक्तियों में शैक्षिक तकनीकी के महत्व पर प्रकाश डाल रहे हैं–

1. **शिक्षण अधिगम प्रक्रिया की प्रभावपूर्णता में वृद्धि :** शैक्षिक तकनीकी शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया को प्रभावपूर्ण बनाकर अपेक्षित सुधार करती है। इसके द्वारा विद्यार्थियों के ज्ञानात्मक, प्रभावात्मक मनोगत्यात्मक तत्वों का श्रेष्ठम विकास होता है।
2. **प्रदा का अधिकतम बिन्दु :** शैक्षिक तकनीकी की सहायता से अधिगम सुविधाओं में अधिकतम वृद्धि हुई है। इसका मुख्य कारण यह है कि मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, गणित, इन्जीनियरिन्ग तथा अन्य सामाजिक एवं वैज्ञानिक विषयों द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों का प्रयोग करती है। इससे विद्यार्थियों को दिए गए ज्ञान अथवा आदा से अधिकाधिक प्रदा उनकी योग्यता के रूप में होता है।
3. **संसाधनों का अधिकतम प्रयोग :** विकासशील राष्ट्रों के संसाधन सीमित होते हैं। उनके विशेषज्ञों, उपकरणों, स्कूल भवनों तथा

कागज एवं समय का अभाव होता है। शैक्षिक तकनीकी इस बात पर बल देती हैं, कि विद्यमान स्रोतों का सीखने की परिस्थितियों में अधिक प्रयोग किया जाय, जिससे राष्ट्र के सभी विद्यार्थी उन सीमित स्रोतों से जो शिक्षण कार्य के लिए उपलब्ध हैं, अधिकाधिक लाभान्वित हो सकें। इस सम्बन्ध में हम अपने पाठकों को स्पष्ट कर दें कि शैक्षिक तकनीकी ने रेडियो तथा टेलीविजन आदि अनेक प्रविधियों का विकास किया है जिनकी सहायता से जन–शिक्षा के प्रसार एवं विस्तार में आश्चर्यजनक सहयोग प्राप्त हुआ है। शैक्षिक तकनीकी के उपर्युक्त महत्व से स्पष्ट है कि इस विषय के अध्ययन की हमारे देश में परम आवश्यकता है।

2. अध्ययन की आवश्यकता

प्रस्तावित शोध की विषय वस्तु माध्यमिक शिक्षा स्तर पर शैक्षिक तकनीकी के उपयोग के मूल्यांकन एवं उसके उद्देश्य की पूर्ति पर लक्षित है। अतः इस शोध कार्य से शोध क्षेत्र के विशेष संदर्भ में निम्नलिखित महत्वपूर्ण योगदान प्राप्त होगा।

- माध्यमिक शिक्षा स्तर पर शैक्षिक तकनीकी की उपयोगिता का मूल्यांकन हो सकेगा।
- शैक्षिक तकनीकी के माध्यम से शिक्षण कार्य में आने वाली समस्याओं एवं कठिनाइयों की जानकारी प्राप्त हो सकेगी।

3. शोध की परिकल्पनायें

1. आगरा जिले के माध्यमिक शिक्षा स्तर के अधिकांश विद्यालयों में शैक्षिक तकनीकी का उपयोग नहीं किया जा रहा है।
2. माध्यमिक शिक्षा स्तर पर तकनीकी शिक्षा हेतु विद्यालयों में पर्याप्त संसाधन उपलब्ध नहीं हैं।

4. उद्देश्य

- माध्यमिक शिक्षा स्तर पर शैक्षिक तकनीकी के उपयोग एवं प्रभाव की वास्तविक स्थिति ज्ञात करना।
- माध्यमिक शिक्षा स्तर पर शैक्षिक तकनीकी के उपयोग में आने वाली कठिनाइयों की वास्तविक जानकारी प्राप्त करना।

5. शोध समस्या का सीमांकन

5.1 भौगोलिक परिसीमन

शोध अध्ययन का क्षेत्र आगरा जिला है, जिसके अन्तर्गत 15 विकास खण्ड – फतेहपुर सीकरी, अछनेरा, अकोला, बिचपुरी, बरौली–अहीर, खंदौली, एत्मादपुर, खेरागढ़, सैंया, शमशाबाद, फतेहाबाद, पिनाहट, बाह, जैतपुर–कलां एवं जगनेर हैं। भौगोलिक रूप से आगरा जिला कुछ विषमांगी जरूर है, किन्तु आवागमन की दृष्टि से जिले का कोई भी क्षेत्र दुर्गम एवं पहुँच क्षेत्र के बाहर नहीं है। अतः आगरा जिले की राजस्व सीमा के माध्यमिक शिक्षा स्तर के सभी शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों को इस शोध अध्ययन में सम्मिलित किया गया है तथा आगरा जिले की राजस्व सीमा ही शोध क्षेत्र का भौगोलिक परिसीमन है।

5.2 विषयवस्तु का परिसीमन

शोध अध्ययन की विषयवस्तु का परिसीमान शोध क्षेत्र आगरा जिले में माध्यमिक शिक्षा स्तर पर शैक्षिक तकनीकी के उपयोग एवं प्रभाव के समस्त संदर्भों तक किया गया है। जिसमें शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर शैक्षिक तकनीकी के उपयोग, विद्यालयों में तकनीकी शिक्षा हेतु संसाधनों की उपलब्धता, शासकीय एवं अशाासकीय माध्यमिक विद्यालयों में तकनीकी शिक्षा हेतु संसाधनों की उपलब्धता में अन्तर शिक्षकों द्वारा शैक्षिक तकनीकी का उपयोग, माध्यमिक शिक्षा स्तर पर शैक्षिक तकनीकी का प्रभाव, छात्र–छात्राओं द्वारा ग्रहण किये गये ज्ञान को स्थायी रखने में शैक्षिक तकनीकी का प्रभाव, शिक्षण कार्य को वैज्ञानिक वस्तुनिष्ठ, स्पष्ट, सरल एवं रूचिकर बनाने में शैक्षिक तकनीकी का प्रभाव, शैक्षिक तकनीकी द्वारा शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के व्यवहार में परिवर्तन तथा शैक्षिक तकनीकी के माध्यम से शिक्षण कार्य हेतु विद्यालयों को शासन द्वारा उपलब्ध कराये जा रहे संसाधनों आदि के अध्ययन तक परिसीमन किया गया है।

6. शोध विधियाँ

शोध कार्य को संपूर्णता प्रदान करने हेतु कई प्रकार की शोध विधियों का उपयोग किया जाता है। शोध विधियों के मुख्य प्रकार ऐतिहासिक, वर्णनात्मक एवं प्रयोगात्मक है। शोध कार्य के अनुरूप प्रत्येक शोध विधि की अपनी विशेषताएँ एवं उपयोगिता है। शैक्षिक अनुसंधान की दृष्टि से प्रस्तावित शोध कार्य मुख्य रूप से सर्वेक्षणात्मक (वर्णनात्मक) होगा। प्रस्तावित अध्ययन में निम्नलिखित विधियों एवं उपकरणों का उपयोग किया जाएगा.

6.1 सर्वेक्षण विधि

शैक्षिक अनुसंधान में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग सर्वाधिक किया जाता है। इस विधि के द्वारा गुणात्मक एवं संख्यात्मक दोनों ही प्रकार की जानकारियाँ प्राप्त की जा सकती हैं। अपने इस अनुसंधान में भी शोधार्थी ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है।

6.2 अवलोकन विधि

शोध अध्ययन के लक्ष्यों की प्राप्ति में शैक्षिक तकनीकी की वर्तमान स्थिति का पता लगाने हेतु न्यादर्श के रूप में चयनित माध्यमिक शिक्षा स्तर के विद्यालयों का अवलोकन किया गया है।

6.3 अभिलेख अध्ययन विधि

शैक्षिक अनुसंधानों में तथ्यपूर्ण उपलब्धि के लिए अभिलेख अध्ययन विधि एक महत्वपूर्ण एवं उपयोगी विधि है। अभिलेख अध्ययन से तात्पर्य, शोध समस्या से सम्बन्धित उन समस्त अभिलेखों, पुस्तकों, ज्ञान कोषों, समाचार, पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों, प्रकाशित व अप्रकाशित शोध प्रबन्धों से है, जिनके अध्ययन से शोधार्थी को अपनी शोध समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा को तैयार करने एवं शोध कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है।

7. न्यादर्श चयन

शोध अध्ययन में शोधार्थी द्वारा आगरा जिले के सभी 15 विकासखण्डों – फतेहपुर सीकरी, अछनेरा, अकोला, बिचपुरी, बरौली–अहीर, खंदौली, एत्मादपुर, जगनेर, खेरागढ़, सैंया, शमशाबाद, फतेहाबाद, पिनाहट, बाह, जैतपुर–कलां में से प्रत्येक विकासखण्ड से माध्यमिक शिक्षा स्तर के 10–10 विद्यालयों, कुल 150 विद्यालयों को विस्तृत शोध सर्वेक्षण हेतु न्यादर्श में चयनित किया गया है तथा न्यादर्श में चयनित प्रत्येक विद्यालय के प्राचार्यों, कुल 150 प्राचार्यों, प्रत्येक विद्यालय में कार्यरत 4–4 शिक्षकों, कुल 600 शिक्षकों, प्रत्येक विद्यालय में अध्ययनरत 10–10 छात्र–छात्राओं कुल 1500 छात्र–छात्राओं (750 छात्र + 750 छात्राओं) एवं इसके अतिरिक्त प्रत्येक विकासखण्ड से शिक्षा विभाग से सम्बन्धित 4–4 अधिकारियों, कुल 60 अधिकारियों को भी शोध सर्वेक्षण हेतु न्यादर्श में चयनित किया गया है। शोधार्थी द्वारा सभी न्यादर्शों का चयन दैव–निदर्शन विधि से किया गया है।

8. पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों का विवरण

किसी भी शोध कार्य को सोद्देश्य तथा अधिक प्रभावी बनाने के

दृष्टिकोण से यह आवश्यक हो जाता है कि शोधार्थी अपनी शोध समस्या के समरूप पूर्व में किए गये अन्य शोध कार्यों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर ले। इसी दृष्टिकोण से शोधार्थी ने माध्यमिक स्तर पर शैक्षिक तकनीकी का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पर किये गये कुछ प्रमुख तथा सहज रूप से उपलब्ध पूर्व शोध अध्ययनों के विषय–वस्तु की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया है। संक्षेप में उनका विवरण निम्न है – कपिल, एच. के. (1986–1987)[1], यादव, परमानंद सिंह एवं यादव लालधारी (2006)[2], शर्मा, पिंकी (2016)[3], शर्मा (2004)[4].

9. शोध क्षेत्र का परिचय

आगरा जिला पश्चिमी क्षेत्र के अन्तर्गत दक्षिण–पश्चिमी भूभगा में स्थित हैं यह उत्तर से दक्षिण में 27.14 डिग्री से 27.94 डिग्री उत्तरी अक्षांश तथा पश्चिम से पूर्व की ओर 77.20 डिग्री से 78.54 डिग्री पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है। आगरा जिले की उत्तरी सीमा जनपद बुलन्दशहर एवं जनपद बदायूँ से मिलती है। पूर्वी सीमा जनपद फर्रूखाबाद एवं इटावा से मिलती है। दक्षिणी सीमा मध्य प्रदेश एवं राजस्थान से मिलती है।

प्रशासनिक दृष्टि से आगरा जिले की तहसील एवं विकासखण्ड इस प्रकार हैं – आगरा जिले में छः तहसीले हैं, आगरा, किरावली, खेरागढ़, फतेहाबाद, बाह, एत्मादपुर तथा आगरा जिले के 15 विकासखण्ड है, बरौली अहीर, बिचपुरी, अकोला, अछनेरा, फतेहपुर सीकरी, जगनेर, खेरागढ़, सैंया, फतेहाबाद शमशाबाद, बाह, पिनाहट जैतपुर कला, एत्मादपुर, खंदौली।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में तालिकाबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

परिकल्पना क्रमांक –01: "आगरा जिले के माध्यमिक शिक्षा स्तर के अधिकांश विद्यालयों में शैक्षिक तकनीकी का उपयोग नहीं किया जा रहा है।"

तालिका 1: आगरा जिले के माध्यमिक शिक्षा स्तर के अधिकांश विद्यालयों में शैक्षिक तकनीकी का उपयोग का अध्ययन

क्र.	न्यादर्श	न्यादर्श में चयनित संख्या	आगरा जिले में माध्यमिक शिक्षा स्तर के अधिकांश विद्यालयों में शैक्षिक तकनीकी का					
			उपयोग किया जा रहा है		उपयोग नहीं किया जा रहा है		नही पता	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	अधिकारी	60	13	21.66	40	66.67	07	11.67
2.	प्राचार्य	150	34	22.67	98	65.33	18	12.00
3.	शिक्षक	600	108	18.00	465	77.50	27	4.50
4.	छात्र	1500	137	9.13	1320	88.00	43	2.87
5.	अभिभावक	600	90	15.00	479	79.83	31	5.17
योग		2910	382	13.13	2402	82.54	126	4.33

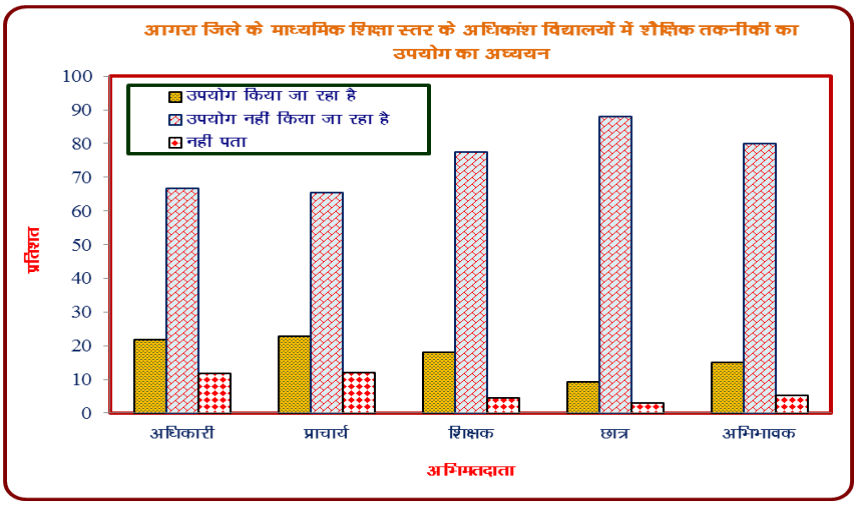

आकृति 1

तालिका क्रमांक 1 में संकलित तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि 66.67 प्रतिशत अधिकारी, 65.33 प्रतिशत प्राचार्य, 77.50 प्रतिशत शिक्षक, 88.00 प्रतिशत छात्र 79.83 प्रतिशत अभिभावकों का अभिमत है कि आगरा जिले में माध्यमिक शिक्षा स्तर के अधिकांश विद्यालयों में शैक्षिक तकनीकी का उपयोग नही किया जा रहा है।

तालिका क्रमांक 1 में संकलित तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि 13.13 प्रतिशत इस बात से सहमत हैं कि आगरा जिले में माध्यमिक शिक्षा स्तर के अधिकांश विद्यालयों में शैक्षिक तकनीकी का उपयोग किया जा रहा है। 82.54 प्रतिशत यह मानतें है कि आगरा जिले में माध्यमिक शिक्षा स्तर के अधिकांश विद्यालयों में शैक्षिक तकनीकी का उपयोग नही किया जा रहा है, जबकि 4.33 प्रतिशत को आगरा जिले में माध्यमिक शिक्षा स्तर के अधिकांश विद्यालयों में शैक्षिक तकनीकी का उपयोग के सम्बंध में कुछ भी पता नही है।

अतः परिकल्पना क्र. 1 सत्यापित होती है।

परिकल्पना क्रमांक – 02

''माध्यमिक शिक्षा स्तर पर तकनीकी शिक्षा हेतु विद्यालयों में पर्याप्त संसाधन उपलब्ध नहीं हैं।"

तालिका 2: माध्यमिक शिक्षा स्तर पर तकनीकी शिक्षा हेतु विद्यालयों में पर्याप्त संसाधन उपलब्ध के सम्बंध में अभिमत

क्र.	न्यादर्श	न्यादर्श में चयनित संख्या	माध्यमिक शिक्षा स्तर पर तकनीकी शिक्षा हेतु विद्यालयों में पर्याप्त संसाधन					
			उपलब्ध है		उपलब्ध नहीं है		नही पता	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	अधिकारी	60	17	28.33	40	66.67	03	5.00
1.	प्राचार्य	150	22	14.67	123	82.00	05	3.33
2.	शिक्षक	600	106	17.67	473	78.83	21	3.50
3	छात्र	1500	103	6.87	1365	91.00	32	2.13
4.	अभिभावक	600	95	15.83	481	80.17	24	4.00
योग		2910	343	11.79	2482	85.29	85	2.92

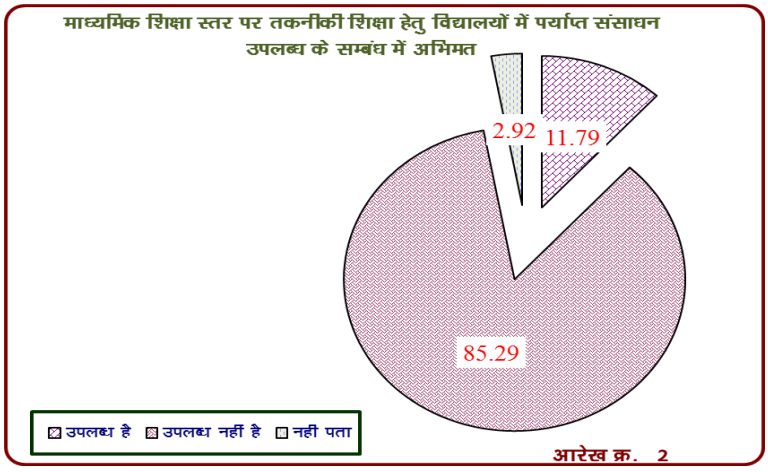

आकृति 2

तालिका क्रमांक 2 मे संकलित प्रदत्तों के अध्ययन से स्पष्ट है कि 66.67 प्रतिशत अधिकारी, 82.00 प्रतिशत प्राचार्य, 78.83 प्रतिशत शिक्षक, 91.00 प्रतिशत छात्र व 80.17 प्रतिशत अभिभावक यह मानते है कि आगरा जिले में माध्यमिक शिक्षा स्तर पर तकनीकी शिक्षा हेतु विद्यालयों में पर्याप्त संसाधन उपलब्ध नही कराये जा रहे है।

तालिका क्रमांक 2 मे संकलित प्रदत्तों के अध्ययन से स्पष्ट है कि 11.79 प्रतिशत इस बात से पूर्ण सहमत हैं कि आगरा जिले में माध्यमिक शिक्षा स्तर पर तकनीकी शिक्षा हेतु विद्यालयों में पर्याप्त संसाधन उपलब्ध कराये जा रहे है। 85.29 प्रतिशत यह मानते है कि आगरा जिले में माध्यमिक शिक्षा स्तर पर तकनीकी शिक्षा हेतु विद्यालयों में पर्याप्त संसाधन उपलब्ध नही कराये जा रहे है जबकि 2.92 प्रतिशत को आगरा जिले में माध्यमिक शिक्षा स्तर पर तकनीकी शिक्षा हेतु विद्यालयों में पर्याप्त संसाधन उपलब्ध के संबंध में पता नही है।

अतः परिकल्पना सत्यापित होती है।

निष्कर्ष

अनुसंधान के परिणामों से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर यह ज्ञात हुआ कि 82.54 प्रतिशत आगरा जिले में माध्यमिक शिक्षा स्तर के अधिकांश विद्यालयों में शैक्षिक तकनीकी का उपयोग नही किया जा रहा है और 85.29 प्रतिशत माध्यमिक शिक्षा स्तर पर तकनीकी शिक्षा हेतु विद्यालयों में पर्याप्त संसाधन उपलब्ध नही कराये जा रहे है।

संदर्भ

1. कपिल एच. के. (1986–1987): अनुसंधान विधियाँ, हर प्रसाद भार्गव, आगरा।
2. यादव, परमानंद सिंह एवं यादव लालधारी (2006) : वर्तमान शैक्षिक समस्याओं के समाधान में प्राचीन भारतीय शैक्षिक परम्पराओं की प्रासंगिकता। भारतीय आधुनिक शिक्षा, एन.सी.ई.आर.टी. वर्ष–24, अंक–3, पृ0 75–84।
3. शर्मा, पिंकी (2016) – शिक्षा का महत्व। दैनिक जागरण आगरा से मुद्रित एवं प्रकाशित, 9 मई 2016।
4. शर्मा, ओ.पी.: ग्रामीण क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी, प्रतियोगिता दर्पण अप्रैल 2004.